# श्रीमद्भगवतगीता में निहित दार्शनिक तत्व

डॉ. दीप्ति वाजपेयी
एसो. प्रो. संस्कृत
कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
बादलपुर, गौतमबुद्धनगर

***सारांश***

*गीता का दर्शन अद्वैतवादी दर्शन है। साँख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा आदि समस्त दर्शनों का समन्वय करते हुए गीता अद्वैत वेदान्त के सिद्धान्त का प्रतिपादन करती है। गीता में परमात्मा व आत्मा में अंश-अंशीभाव स्वीकार किया गया है। निर्विकार, अनादि, अनन्त, निर्गुण, निराकार, अविनाशी ब्रह्म जब "एकोऽहं बहुस्यामि" के भाव से युक्त होता है तो सृष्टि का निर्माण होता है। सृष्टि व सृष्टिकर्ता परमात्मा में अभिन्नता की अनुभूति करना मानव जीवन का लक्ष्य ही मोक्ष है।*

**मुख्य शब्द**

**परम ब्रह्म, अद्वैत, जीवात्मा, निष्काम कर्मयोग, दर्शन, मोक्ष**

**दार्शनिक विचार :-**

यह सम्पूर्ण संसार दु:खमय है और दु:खनिवृत्ति जीवन का लक्ष्य है। दु:खनिवृत्ति के लिये उपनिषदों का अध्ययन, चिन्तन एवं मनन महत्वपूर्ण माना जाता रहा है। किन्तु वर्तमान परिस्थितियों में उपनिषदों के गहन अध्ययन के लिये समयाभाव के साथ-साथ अपेक्षित प्रज्ञा का भी अभाव पाया जाता है अत: अल्प समय व सहज बोध की दृष्टि से गीता का ज्ञान ऐसा सुलभ सुधातत्व है, जो उपनिषदों के सार से निर्मित हुआ है। जैसा कि कहा भी गया है-

**"सर्वोपनिषदों गावों दोग्धा गोपालनन्दन:।**
**पार्थोवत्स सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतमहत्"।।**

अर्थात् सभी उपनिषद् गाय है, श्रीकृष्ण दूध दुहने वाले हैं, अर्जुन दुग्ध पान करने वाले है तथा गीता रूपी अमृत दुग्धवत् है। गीता के दार्शनिक विचारों का अवलोकन निम्न बिन्दुओं के अन्तर्गत किया जा सकता है।

**तत्व मीमांसा-**

**(क) सर्वोपरि सत्ता या अन्तिम सत्य:**

सर्वोपरि सत्ता, परमात्मा या ब्रह्म है। यही एकमात्र अन्तिम सत्य है। इसे पुरुषोत्तम या ईश्वर भी कहा गया है। यह अनिवाशी, सर्वज्ञ, सार्वकालिक, सर्वत्र व्याप्त, अनादि, सूक्ष्मातिसूक्ष्म, शुद्ध, सच्चिदानंद तथा अविद्या से परे है-

**"उत्तम: पुरुषस्तन्य: परमात्मेत्युदाहृत:।**

**या लोकत्रय माविश्य, विभर्त्यव्यय ईश्वरः॥1॥**

ब्रहा अद्वैत है इसी में सम्पूर्ण जगत् मणियों के सदृश्य गुथा हुआ है-

**"मत्तः परतरं नान्यत्किंचिदस्तिधनंजय।**
**मयि सर्वमिंद प्रोत सूत्रे मणिगणा इव॥2॥**

यह सर्वोपरि सत्ता एक होते हुये भी अव्यक्त तथा व्यक्त भेद से दो रूपों में विभक्त है। अव्यक्त ब्रह्म, निराकर, निर्गुण, अनादि, अनन्त व अविनाशी स्वरूप वाला है। अव्यक्त का व्यक्त रूप अजन्मा और सब प्राणियों का ईश्वर होते हुए भी अपनी प्रकृति को अधीन कर योगमाया से प्रकट होता है-

**"अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन्।**
**प्रकृति स्वामाधिष्ठाय संभावाम्यात्ममायया"॥3॥**

यह ब्रह्म पुरुषोत्तम स्वरूप में धर्म की हानि एवं अधर्म की वृद्धि पर साधुओं की रक्षा, दुष्टों के संहार व धर्म संस्थापना हेतु युग-युग में प्रकट होता है।

**2. जीवात्माः**

"ममैवांशों जीवलोके जीवभूतः सनातनः" कहकर श्रीकृष्ण न जीवात्मा को परमात्मा का ही सनातन अंश स्वीकार किया है। आत्मा अविनाशी, अप्रमेय, नित्य व शाश्वत् है। इसे न शास्त्र काट सकते है, न आग जला सकती है, न जल भिगो सकता है, न वायु सुखा सकती है-

**"न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायभूत्वा,**
**भविता वा न भूयः।**
**अजोनित्यः शाश्वतोऽय पुराणो,**
**न हन्यते हन्यमाने शरीरे"॥4॥**

इस अविनाशी व निर्विकार आत्मा को प्रकृति से उत्पन्न तीन गुण-सत्, रज, तम शरीर से बाँधते हैं-"

**सत्वं रजस्तमं ति गुणाः प्रकृति संभवाः।**
**निबध्नन्ति महाबाहो देहे देहिनमव्यम्"॥5॥**

**3. प्रकृति और पुरुषः**

गीता प्रकृति और पुरुष इन दो तत्वों से ही विश्व की उत्पत्ति मानती है। गीता में प्रकृति के दो रूप स्वीकार किये गये हैं- परा प्रकृति और अपरा प्रकृति। अपरा निम्न श्रेणी की प्रकृति है जिसके आठ विभाग है- पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश, मन, बुद्धि एवं अहंकार। परा उच्च श्रेणी की प्रकृति है जो सबको शक्ति देती है। यह चेतन प्रकृति है-

**"अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिः विद्धि में परम्**
**जीवभूता महाबाहों यथेदंधार्यते जगत्"॥6॥**

गीता अद्वैत वादी दर्शन होने के कारण प्रकृति व पुरुष में द्वैत स्वीकार नहीं करती। पुरुष चेतना है, इस बीज रूप पुरुष को ईश्वर जड़ प्रकृति के गर्भ में प्रवेश कराता है। तभी सब प्राणियों की उत्पत्ति होती है-

**"मम योनिमहद् ब्रह्म गर्भ दधाम्यहम्।**
**संभवः सर्वभूतानां ततो भवति भारत"॥7॥**

अतः जड़ व चेतन प्रकृति के योग से जगत की उत्पत्ति होती है।

**4. मनुष्यः**

मनुष्य को गीता में क्षेत्र कहा गया है। यह क्षेत्र (शरीर) पंच महाभूतों, मन, अहंकार, बुद्धि, मूल प्रकृति अर्थात् त्रिगुणमयी (सत-रज-तम) माया व दस इन्द्रिया तथा इनके विषयों से युक्त है। मनुष्य में शरीर तत्व नाशवान व आत्मा नित्य शाश्वत् तत्व है यह आत्मा परमात्मा का ही अंश है। सम्पूर्ण प्राणी जन्म से पहले व मृत्यु के बाद आत्मा ही होते हैं-

**"अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत॥"8॥**

**ज्ञान मीमांसाः-**

गीता में ज्ञान की सर्वश्रेष्ठता स्वीकार करते हुये कहा गया है-

**"न हि ज्ञानेन सदृंश पवित्रमिहि विद्यते॥"9॥**

ज्ञानामृत का सेवन करने वाले ही परमब्रह्म परमात्मा को प्राप्त होते हैं। ज्ञान के द्वारा ही पापों से मुक्ति मिलती है और ज्ञानाग्नि ही सम्पूर्ण कर्मो का नाश करती है। व्यक्ति ज्ञान के द्वारा ही सच्चिदानंद स्वरूप के दर्शन करता हुआ मोक्ष को प्राप्त होता है क्योंकि ज्ञान मानव का मोह नष्ट करके उसे चैतन्य बना देता है।

**ज्ञान-प्राप्ति का लक्ष्य-**

ज्ञान प्राप्ति का लक्ष्य परमब्रह्म है अर्थात् गीता के अनुसार ज्ञेय या जानने योग्य परमात्मा है। जिसे जानकर व्यक्ति परमानन्द में विलीन हो जाता है-

**"ज्ञेय मत्तप्रवक्ष्यामि मज्ज्ञात्वामृतमश्नुते"॥10॥**

गीता में ज्ञान प्राप्ति का स्रोत आत्मा को बताया गया है। आत्मा, जो कि बुद्धि से सूक्ष्म तथा सब प्रकार से बलवान व श्रेष्ठ है, को जानकर ही ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

**ज्ञान-प्राप्ति की प्रक्रिया-**

गीता में ज्ञान-प्राप्ति की निम्नलिखित प्रक्रिया को स्वीकार किया गया है-

**(1) कामनाओं की समाधि-**

ज्ञान कामनाओं से आवृत है। इंद्रियां, मन व बुद्धि इस काम के निवास स्थान है। काम, मन, बुद्धि व इन्द्रियों के द्वारा ही ज्ञान को आच्छादित कर जीवात्मा को मोहित करता है अतः

इसे समाधिस्थ करना आवश्यक है।

**( 2 ) गुरु की प्रति श्रद्धा एवं तत्परता-**

जितेन्द्रिय, गुरु के प्रति श्रद्धालु तथा ज्ञान प्राप्ति के लिये तत्पर मनुष्य ही ज्ञान को प्राप्त करता है-

**"श्रद्धावान् लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः"॥11॥**

**( 3 ) गुरु-सेवा व प्रश्न-प्रतिप्रश्न-**

ज्ञान प्राप्ति की प्रक्रिया में गुरु सेवा का महत्वपूर्ण स्थान है। अतिरिक्त ज्ञानी जनों से प्रश्न-प्रतिप्रश्न द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है-

**"तद्धिद्धि प्राणिपातेन प्रतिप्रश्नने सेवया"॥12॥**

अभ्यास तथा योग के द्वारा एकाग्रता प्राप्त करना एवं मन व इंद्रियों को वश में करना भी ज्ञान प्राप्ति में सहायक है। गीता में सात्विक, राजस व तामस तीन प्रकार का ज्ञान बताया गया है जिसमें सात्विक ज्ञान श्रेष्ठ है जिसको योगाभ्यास द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

**ज्ञानी व्यक्ति के लक्षण-**

ज्ञानी व्यक्ति आध्यात्म ज्ञान में नित्य स्थित होकर प्रणिमात्र में परमात्मा के दर्शन करता है। ज्ञान-प्राप्त व्यक्ति सरल, शुद्ध, दम्भाचरण रहित, क्षमावान् अन्तः करण से स्थिर, अनासक्त, मोह रहित, हर्ष-शोकादि में होता है। ऐसा ही व्यक्ति जीवनमुक्त होकर मोक्ष प्राप्त करता है।

**मूल्य मीमांसा-**

गीता की आचार संहिता निष्काम कर्मयोग है, जो मात्र भारतीय के लिये न होकर समस्त मानव मात्र के लिये है। निष्काम कर्मयोग का आचरण कार्य से विरक्ति न होकर कार्य में विरक्ति है अर्थात मानव कर्म कर्तव्यपूर्ति के निमित्त है। मोक्ष जीवन का अन्तिम लक्ष्य है अतः मोक्ष ही सर्वोच्च मूल्य है। ब्रह्मत्व की प्राप्ति अथवा ब्रह्म के साथ सम्पर्क (ब्रह्मसंस्पर्शम्) ही मोक्ष है और यही जीवन का परम उत्कर्ष है। ईश्वर सत् चित् एवं आनन्दमय है अतः गीता के अनुसार मानव जीवन के मूल्य है- सत्यं, शिवं, सुन्दर, जिसे ज्ञान, कर्म व भक्ति से सम्बद्ध किया जा सकता है। ज्ञान, सत्य से सम्बन्धित है और कर्म ही कल्याणकारी है। कर्म करना अधिकार व कर्तव्य दोनों ही है। मानव को कर्महीन जीवन नहीं जीना चाहिये, किन्तु कर्म, फल की इच्छा से रहित अनासक्त भाव से करना चाहिए।

भक्ति सुन्दरता से परिपूर्ण है। इस प्रकार सत्यं, शिवं, सुन्दर या ज्ञान, कर्म, भक्ति कास समन्वय मानव जीवन के विशिष्ट मूल्य है। इन मूल्यों का एक ही गन्तव्य है- मोक्ष। अतः मोक्ष ही गीता के अनुसार अन्तिम व सर्वोपरि मूल्य है। मोक्ष प्राप्त व्यक्ति राग-द्वेष, क्रोध-लोभ, मोह, हर्ष शोकादि से मुक्त होकर मन इन्द्रिय को निग्रह कर समत्व बुद्धि से सब प्राणियों में समभाव से परमात्मा के दर्शन करता हुआ एकीभाव से ब्रह्म में स्थित होता है।

**सन्दर्भ** -


1. गीता–18:63
2. गीता–7:7
3. गीता–4:6
4. गीता–2:20
5. गीता–14:5
6. गीता–7:5
7. गीता–14:3
8. गीता–2:28
9. गीता–4:38
10. गीता–13:12
11. गीता–4:84
12. गीता–4:34